श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

मेरे सिर पर रख बनवारी अपने ये दोनों हाथ ,
देना हो तो दीजिए जनम जनम का साथ ।
अब तो कृपा कर दीजिए, जनम जनम का साथ ॥

देने वाले श्याम प्रभु तो धन संपत्ति क्या मांगें ।
श्याम प्रभु से मांगे तो फिर मान प्रतिष्ठा क्या मांगें ।
मेरे जीवन में बस कर दो, तुम किरपा की बरसात ॥

झुलस रहें है दुःख की धूप में, प्यार की छैया कर देना ।
बिन मांझी के नाव चले ना, तुम पतवार पकड़ लेना ।
मेरा रास्ता रौशन कर दे, छायी अन्धियारी रात ॥

सुना है हमने शरणागत को अपने गले लगाते हो ।
ऐसा हमने क्या माँगा जो देने में सकुचाते हो ।
चाहे सुख में रख या दुःख में, रखना भक्तन की लाज ॥

॥ गीतम् 15॥

(अथ पञ्चदशप्रबन्धो गुर्जरीरागेण एकतालीताले गीयते)

समुदितमदने रमणीवदने चुम्बनवलिताधरे ।
मृगमदतिलकं(लँ) लिखति सपुलकं(म्) मृगमिव रजनीकरे ॥
रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना ॥ 1॥

घनचयरुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने ।
कुरबककुसुमं(ञ्) चपलासुषमं(म्) रतिपतिमृगकानने ॥ 2॥ रमते

घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरूषिते ।
मणिसरममलं(न्) तारकपटलं(न्) नखपदशशिभूषिते ॥ 3॥ रमते

जितविसशकले मृदुभुजयुगले करतलनलिनीदले ।
मरकतवलयं(म्) मधुकरनिचयं(वँ) वितरति हिमशीतले ॥ 4॥ रमते

रतिगृहजघने विपुलापघने मनसिजकनकासने ।
मणिमयरसनं(न्) तोरणहसनं(वँ) विकिरति कृतवासने ॥ 5॥ रमते

चरणकिसलये कमलानिलये नखमणिगणपूजिते ।
बहिरपवरणं(यँ) यावकभरणं(ञ्) जनयति हृदि योजिते ॥ 6॥ रमते

रमयति सुदृशं(ङ्) कामपि सुभृशं(ङ्) खलहलधरसोदरे ।

किमफलमवसं(ञ्) चिरमिह विरसं(वँ) वद सखि विटपोदरे ॥ 7॥ रमते

इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके ।
कलियुगचरितं(न्) न वसतु दुरितं(ङ्) कविनृपजयदेवके ॥ 8॥ रमते